पन्द्रह अगस्त 1951 को लालकिले से देश के नाम
प्रधानमंत्री का संदेश

--दिनांक:--15.8.51--

बहिनों और भाइयों,

जयहिन्द जरा मुझे आपकी आवाज भी तो सुनाई दे, मेरे साथ कहिए, जयहिन्द। आज पांचवे बार मैं यहां इस लालकिले की दीवार पर आया हूं, इस प्यारे झंडे को फहराने के लिए। चार बरस हुए जब पहले दफे मैं आया था और आप आये थे चार बरस हुए पहले दफे यहां आया था मैं और आप लाखों की तादाद में यहां जमा हुए हैं और हमने इस अपने पुराने और नये झंडे को यहां उठाया था। और यह दिल्ली शहर जो सैकड़ों और हजारों बरस से अजीबअजीब नज्जारे देख चुका है, जिसके सामने हिन्दुस्तान की तारीख और इतिहास एक किताब की तरह से लिखा गया है और उसने देखा है, और पढ़ा है। इस दिल्ली शहर ने ये ऐक नयी तस्वीर देखी, एक नयी बात उसके सामने आयी एक नयी कौम की करवट, उसने देखी। चार बरस हुएऔर मुनासिब था कि आप और हम उस मौके को मानने के लिए यहां जमा हुए, यहां इस साल लाल किले की दीवार पर या इसके करीब क्योंकि इस किले की एक ईंट और पत्थर जैसे कि इस दिल्ली का एक एक ईंट और पत्थर हिन्दुस्तान की तारीख से भरा है। इस शहर ने हिन्दुस्तान की शान देखी और हिन्दुस्तान का गिरना देखा। हिन्दुस्तान का आगे बढ़ना देखा और उसका पतन देखा। सब बातें इसकी दिल्ली की याद में और दिल्ली के दिमाग में यह पुरानी तस्वीरें सब कुछ हैं। तो इसलिए मुनासिब

था कि हम इस वक्त जब कि एक नयी करवट कौम ने ली दिल्ली शहर और दिल्ली का यह लाल किला इस बात को देखता, और उससे इसका भी कोई सम्बंध किया जाता । आप और हम चार बरस हुए यहां जमा हुए है, और शहर में, इस शहर में और हिन्दुस्तान के हर एक गावं और शहर में खुशी मनाई गयी थी, क्योंकि एक हमारे बड़े सफर का एक मंजिल पर हम पहुँचे थे । जो हमारी पुरानी आरजू थी जिसके लिए जद्दों जहद किया था, जिसके लिए एक बड़ी शहनशाहियत, एक सामाज्य के खिलाफ का हमने मुकाबला किया था और उसमें हमारी कामयाबी हुई और उसमें हम आखिर में मंजिल पे पहुंचे तो मुनासिब था कि इस बात को हम खुशी से मनाते हैं खुशी हमने मनाई लेकिन हमारी खुशी हम मना ही रहे थे कि ऐसे वाकयात हुए जिससे आंसू हमें आ गये । हमें खाली नहीं लेकिन लाखों को आंसू आये, करोडों को आये क्योंकि हमारे लाखों भाई और बहिन मुसीबत में पड़े और उसकी निशानी आजकल तक है । यहां कितने हमारे भाई शरर्णार्थी अपने अपने घर बार से निकाले हुए दिल्ली में या और हिन्दुस्तान के हिस्सों में है । हमें आंसू आये उनकी मुसीबत पर, लेकिन उससे ज्यादा हमें आंसू आये और हम रंजीदा हुए इस बात से कि हमारे मुल्क में भाई भाई की लडाई हुई और हम अपने ऊंचे उसूल को भूल गये और हमने हाथ उठाया अपने पडौसी पर, और हम सब अपने जो कुछ हमने बुनियादी बातें सीखी थी पिछले जमाने में, वहहमारे दिमाग से हट गयी । रंज हुआ इस बात का कि आखिर एक हिन्दुस्तान की शान थी, जिसको हमारे बड़े नेता ने महात्मा ने दुनियां के सामने रखा था, वो ही शान एकदम से गिर गयी,

हमारे पडोसी लोग क्या करें ? हमारे पास के मुल्क वाले क्या करें अफ्सोस था । खैर उनकी जिम्मेदारी लेकिन रंज हमारे दिल में यही था कि हम अपने उसूलों से गिरे । खैर यह सब बातें याद आती हैं उस चार बरस हुए की जब तस्वीर सामने आती है । चार बरस हुए कोई बड़ा वक्फा नहीं है बडा जमाना नहीं है खासकर एक मुल्क की जिंदगी में, लेकिन मुझे मालूम होता है कि यह चार बरस खाली चार बरस नहीं है लेकिन एक करीब करीब एक उम्र बीत गयी क्योंकि इन चार बरसों में जो हमारे तजुर्बे हुए , जो मुसीबतों का समाना करना पड़ा क्योंकि आपको मुल्क वालों को, हमको, उन्होंने इन चार बरसों को बहुत लम्बा कर दिया है । लेकिन फिर मैं सोचता हूं कि अगर हमारे सामने कोई बडी आजमाईश और न होती कोई मुसीबत के तराजू पर हम नहीं तोले गये होते, तब क्या बात होती ? आजकल भी जब मैं देखता हूं ? तो हमों से काफी लोग गफलत में पड जाते हैं कि आजकल दुनियां का हाल है और हिन्दुस्तान का हाल है, उसको भूल जाते हैं अपनी आराम तलबी में या अपनी खुदगर्जी में पड़ जाते हैं चाहे कौम का फायदा हो या नुकसान । अगर आजकल की हालत में ? है तो कहीं हमारे सामने यह बातें आजमाईश की न होती तो सारी कौम गफलत में पड जाती और इससे ज्यादा खतरनाक बात कोई नहीं है कि कौम भर आराम तलबी और खुदगर्जी में पड़ गयी और भूल जायें कि क्या उसके मेराज हैं और भूल जायें कि क्या उसके उसूल और सिद्धान्त हैं, भूल जायें कि क्या क्या खतरे उसके चारों तरफ हैं, क्योंकि असल कमजोरी वह होती है । और सब कमजोरियां उसके सामने कुछ नहीं है । हमने आजादी हासिल की, किस तरह से कौन सी ताकत थी जो हमने

फैदा की ? वह ताकत थी एक दिल की, एक रूहानी ताकत और एक दिल की ताकत, जो की कभी दुश्मन के सामने झुकती नहीं थी जो कि कोई भी मुसीबत आये फिर भी उनसे घबराती नहीं थी यह ताकत महात्मा जी ने हमारे दिलों में डाली, हम तो मामूली आदमी थे, एक कमजोर दिल के आपस में लडने वाले लेकिन उन्होंने यह सबक हमें सिखाया, और अपनी मिसाल से अपने लफ्जों से, अपनी बात से, कि हमें ऊंचे रास्ते पर चलना है, हमें आपस में मिलकर रहना है, क्योंकि मिलकर ताकत होती है हमें इस देश को एक जबरदस्त मजबूत देश बनाना है । जिसके चालीस करोड़ आदमी मिलकर एक तरफ देखते हैं, एक दूसरे की मदद करते हैं, और अगर कोई दुश्मन हो तो उसका मुकाबला करतेहैं । इस तरह से हमारी ताकत बढ़ी । किस की ताकत थी वो किसी बड़े हथियार की नहीं बल्कि हमारे करोड़ों आदमियों की दिलों की ताकत थी, और दिलों का मेल था । अब अगर वह ताकत कम होहो हमारी तो कोई आपकी ऊपर की जो हो ताकत , वह दूर तक नहीं हमें ले जायेगी । इसलिए आज के दिन खास तोर से यह जरूरी है कि जरा हम पीछे देखें, कि क्या चीजें हमें कमजोर करती थी जिन्होंने हिन्दुस्तान को गिराया था, और गुलाम बनाया। और क्या चीजें ऐसी थी जिन्होंने फिर हिन्दुस्तान को उठाया । हमारी ताकत बढाई और आखिर में आजाद किया। यह याद रखने की बात है, क्योंकि आज लोग समझते हैं कि हम आजाद हो गये तो यह काम पूरा हुआ, और फिर अब हम आपस में जो चाहे करें, जो चाहें हम आपस में लडाई भी लडें या और तरह से अपनी ताकत को जाया करें, गलत बात है, याद रखिए कि आजादी एक ऐसी चीज है कि जिस

वक्त गफलत में आप पड़ें वो फिसल जायेगी । वह जा सकती है, वह खतरे में पड़ जाती है, और खासकर आजकल की दुनियां में क्या है आजकल की दुनियां एक खतरनाक दुनियां है एक कड़ी औरसख्त और बेरहम दुनियां है वह रहम नहीं करती दुनियां कमजोर की तरफ जो वो जो कमजोर है कोई कौम और मुल्क वह गिरता है उसके सामने । लेकिन आखिर में ताकत क्या चीज है ? ताकत एक मुल्क की होती है उसकी फौज है, उसकासामान उसके हवाई जहाज हैं, उसके समुन्दरी जहाज हैं और हमें इस बात की खुशी और इस बात का गुरूर है कि हमारी फौज हमारे नौजवान जो फौज में है या हवाई जहाजों को ऊंचे आसमान पर उड़ाते हैं यासमुन्दर की लहरों पर घूमते हैं वह बहादुर नौजवान हैं, तगड़े हैं, और हिन्दुस्तान की माकूल हिफाजत कर सकते हैं । लेकिन आखिर में हिफाजत बड़ी से बड़ी और बहादुर से बहादुर फौज मुल्क की नहीं करती है आखिर में उस मुल्क के लोगों के दिल करते हैं वो तगड़े हैं कि नहीं वो छोटी बात में पड़ते हैं, पावड़ी बातों की तरफ देखते हैंवह आपस में मिलते हैं या आपस में लड़ाई करते हैं वो आखिर ताकत होती है फौज के पीछेभी - और यों भी जो मुल्क को मजबूत करती है । लोग मुल्क के काम करने वाले हैं, या एक आराम करने वाले हैं । अजीब हालत है मैंने देखा बहुत एक पुराने जमाने में अक्सर बड़े जोरों से काम होते थे, मुकाबला होता था, इस आजादी की लड़ाई में और फिर मैं देखने लगा अक्सर लोग जो पहले काम भी करते थे अब उस काम की याद में आराम करते हैं । तो जहां काम की बजाय आराम ज्यादा हुआ वहां कौम कमज़ोर हुई । जहां वो जो हिम्मत थी ।

हमारी उसकी जगह एक सुस्ती आ गयी तो कौम कमजोर हुई इसलिए जरा हमें उस बुनियादी बातों की तरफ देखना है। आज सवेरे हमारे राष्ट्रपति प्रेसीडेन्ट साहब राजघाट गये, मैं भी गया कुछ और लोग भी गये, महज एक फर्ज अदा करने नहीं, बल्कि कुछ ताकत लेने अपने दिमागों को अपने दिल को उस पुरानी याद से, वह याद तो हमेशा हरी रहती है लेकिन फिर भी मुनासिब है कि हम उसको बराबर अपने सामने लाये उन उसूलों को उस सबक को तो मैं वहां गया और गये और वह तस्वीर मेरे सामने आयी, और वह लफ्ज मेरे कानों में गूंज जो बरसों हुए हम सुना करते थे, और अब उनके सुनने से महरूम हो गये। तो वहां गया, वहां से यहां आपके सामने हाजिर हुआ और मेरा ख्याल दौडा कि इस आजकल हिन्दुस्तान की हालत की तरफ किस तरह से हम सब आप और हम इस मुल्क केरहने वाले एक किश्ती पर हैं और अगर वह किश्ती हिलती है तो हम सब हिलते हैं अगर वह किश्ती डूबती है तो हम सब डूबते हैं। यह न कोई समझे कि कोई लोग अगर मुल्क गिरे तो कोई लोग बच जाते हैं। अगर मुल्क आगे बढ़े तो फिर सब लोग आगे बढ़ते हैं। तो हमें यह समझना है कि हमारा नाता क्या है और रिश्ता क्या है? आपस में आप बहस कर लें अलग अलग दल और अलग अलग पार्टी और आप लोग चुनाव में जायें यह सब बातें अलग हैं लेकिन हमारा एक नाता और रिश्ता जबरदस्त हर वक्त का है। खासकर इस वक्त जब दुनियां में खतरे हमारे मुल्क के तरह तरह के बाहरी खतरे और अंदरूनी खतरे तब और भी जरूरी हो जाता है कि हम अपनी छोटी बातों को दबायें और गिरायें और अपने को तगड़ा करें मजबूत करें, और आपस में एकता करें।

याद रखिए चालीस करोड लोग हैं जाहिर सी बात है कि कोई चालीस करोड़ हिन्दुस्तान में फरिश्ते नहीं, कमजोर दिल के हैं, डरपोक दिल के हैं कई लोग ऐसे हैं जो मुल्क के साथ गद्दारी भी करें, सब तरह के मुल्क में होते हैं । तो हमें इस बात से घबराना नहीं है, बाहर के मुल्कों से लोग आ सकते हैं झगड़ा फिसाद पैदा करने । क्योंकि हर एक जानता है कि आखिर में ताकत मुल्क को एक अमन और एकता कायम करने से होती है । इसलिए जो कुछ लोग तो बेवकूफी से झगड़ा पैदा करे, अपनी जहालत से लेकिन कुछ लोग समझ बूझ कर पैदा करते हैं, ताकि मुल्क कमजोर हो, चाहे वह बाहर से आ जाये, या अंदर के हों । मैंने सुना है कि आज ही सुबह आज ही किसी वक्त आज सुबह या रात को दिल्ली शहर में एक ऐसा झगड़ा करने की किसी आदमी ने कोशिश की, ऐसी बात की । तो आपको इस बात से आगाह होना है कि आप किसी ऐसे झगडालू के बातों में न आ जायें, और कोई वाकया भी ऐसा हो जिससे आपको गुस्सा चढ़ें और चढ़ सकता है । बहुत सारी बातें होती हैं, जो नागवार गुजरती हैं गुस्सा चढ़ता है, तो फौरन समझिए कि यह किसी गलत आदमी ने किसी बुरे आदमी ने किसी ऐसे आदमी ने जो झगड़ा कराना चाहता है, उसने कराया है और आप उसमें न पड़िए बल्कि कोशिश हमारी हो कि शान्ति से और इतमीनान से उसको वहीं दबा दें । यह सब में बड़ा मुकाबला है, उन लोगों का जो झगड़ा करते हैं । तो गरज कि इस हमारी चौथी सालगिरह के दिन हमें किस ढंग से इस नये साल का सामना करना है । हमारे मुल्क के अंदर काफी बड़े बड़े सवाल हैं । हमारी उम्मीदें थी, हमने तरह

तरह के नक्शे बनाते थे कि हम हमने एक काम पूरा किया हिन्दुस्तान आजाद हुआ उसके बाद दूसरी लडाई हमें लड़नी है और वो वो लडाई है असली लडाई हिन्दुस्तानी की गरीबी से लडाई हिन्दुस्तानी की बेकारी से लडाई और उस में एक दफें आगे बढ़ें और जीसें सारी कौम तीस चालीस करोड आदमी हिन्दुस्तान के हल्के हल्के उठेगें और उनकी मुसीबतें कम होंगी, यह असली लडाई कि जो हम लडना चाहते थे कि बदकिस्मती से हम फंस गये, किस किस मुसीबत में, किस किस परेशानी में, और उधर आगे न बढ़ सकें, और सब में बड़ी रंज की बात यह हुई कि आजादी आयी, सियासी आजादी आयी लेकिन जो आजादी का फायदा कौम को मिलना चाहिए था कुछ मिला जरूर इसमें कुछ शक नहीं, लेकिन पूरी तौर से नहीं मिला , और काफी परेशानियां आप लोगों के और हिन्दुस्तान के रहने वालों की रहीं । काफी परेशानियां, आप जानते हैं मैं आपको क्या बताऊं, किस तरह से चीजों के दाम बढ़े उसका असर सारी कौम पर चाहे आप तनख्वाह लेते हैं या कुछ और तरह से रहते हैं, दाम बढ़ते जाते हैं, खाने का सवाल खाने की कमी, राशनिंग और क्या क्या बातें आईं आप परेशान हुए और आप लोगों ने और मुल्क ने अक्सर शिकायत की और जा शिकायत/की क्योंकि परेशानी की शिकायत करनी है, लेकिन एक ऐसे जा गये हम उसमें कि कुछ तो और दुनियां के वाकयात अगर वहां कोरिया में लडाई हो तो उसका असर यहां पड़ जाता है , चीजों के भाव पर । तो हमारे काबू के बाहर की बात है । अगर अमेरीका में कोई बात हो, उसका असर यहां की चीजों के दामों पे पड जाता है, लेकिन उसी के साथ यह भी बात है और यह हमारे काबू की बात है ।

कि हमारे मुल्क ही में आज लोग ऐसे जो अपनी खुदगर्जी के लिए अपनी लालच में ऐसी बातें उन्होंने की, कि खुद फायदा हो, चाहे कौम को नुकसान हो। यह गलत बात है जाहिर है और हर हुकूमत को इसको रोकना चाहिए और दबाना चाहिए और काबू में लाना चाहिए। मुमकिन है कि जिस ताकत से जिस पूरी कामयाबी से उसको करना चाहिए नहीं हुआ, लेकिन यह भी याद रखिए कि हुकूमत कुछ करें, आखिर में ऐसे मामले में किसी बड़े मामले में, जब तक आम जनता का साथ न हो, और आम जनता का सहयोग न हो और पूरी मदद न हो, यह बात पूरी चलती नहीं है और यह फिर कालेबाजार और इस तरह से चीजें जो बढ़ती है जरूर गवर्नमेंट उसको कर सकती है, कानून से अपने अख्तियार से लेकिन आखिर में जनता की मदद से यह बात हो सकती है। तो हमें और आपको तरीके निकालने हैं, कि किस तरह से इसको रोकें, जो चीज एक बढ़ाती है, इस वक्त कौम को और मुसीबत में डालती है।

आप शायद जानते हों कि अभी कुछ दिन हुए एक योजना एक पांच बरस की योजना या प्लेन, नेशनल, प्लान राष्ट्रीय योजना निकाली गयी है, जिसका मतलब यह है कि वो किस तरह से हम इस बड़ी लड़ाई की चीजें, बड़ी लड़ाई यानी हिन्दुस्तान के गरीबी के खिलाफ लड़ाई और बेकारी के खिलाफ किस तरह से हिन्दुस्तान में ज्यादा काम हो, ज्यादा पैदावार हो, और ज्यादा धन और दौलत निकले जो कि आम लोगों में जाये। बड़ा काम है थोड़े से आदमियों का नहीं, चालीस करोड़

आदमियों के लिए, तो वह एक बड़ी योजना बहुत सोच विचार के बाद बनी । अभी तक वह आखिर नहीं है, वह छपी नहीं है, और आप भी उसको देख सकते हैं और पढ़ सकते हैं और अपनी सलाह दे सकते हैं, उस पे गौर करके सब सलाहों पर महीने बाद उसको पक्का करेंगे । अब उसमें बहुत सारी बातें ऐसी हैं जो कि सरकारी तौर से करनी है, गवर्नमेंट को करनी है, चाहे वह गवर्नमेंट यहां दिल्ली की हो या हमारे एक एक प्रान्त और एक प्रदेश की हो । लेकिन उसमें यह खास लिखा है विशेषकर कि उसकी जड़ और बुनियाद जो वह जनता के सहयोग की है । हम अगर जनता न करें, करोड़ों आदमी उसमें न लगें, चाहे वह एक एक आदमी थोड़ी बात करें, लेकिन जब वह न लगे तो महज गवर्नमेंट के काम करने से वह बातें नहीं पुरी नहीं होती, आज लोग कहते हैं कि बाहर से मदद लेकर इस काम को करो । हम बाहर से मदद लने को तैयार हैं बशर्ते कि उसमें कोई बंधन न हो । किसी किस्म का, और बाहर की मदद कुछ कुछ हमें मिली है । लेकिन आप याद रखें कि बहुत ज्यादा बाहर की तरफ देखना मदद के लिए भरोसा करना चाहे पैसे के लिए या किसी और बात के लिए कौम को कमजोर करता है । आदाहिज हो जाती है, दूसरों की, तरफ देखना है बहुत आपका सरकारी अफसरों की तरफ देखना और हर बात में गवर्नमेंट कर दें वह भी गलत है, गवर्नमेंट का तो फर्ज और कर्तव्य है कि उन बातों का करना, लेकिन यह पुराना रिवायत अंग्रेजी राज्य के जमाने से अंग्रेजी राज्य आप जानते हैं इस जमाने में मशहूर था कि जो अंग्रेजी अफसर थे, उनके खुशामदी लोग उनसे कहते थे, आप मां बाप, है "मां बाप है, "मां बाप मिलकर हो जाते थे दो खैर अब कोई भी मां बाप यहां नहीं रहा । मैं आपसे

कह देता हूं इस तरह का । और हम नहीं चाहते, हम नहीं चाहते कि आपकी या हमारे लोगों का ध्यान हर वक्त एक रहे एक ऊपर रहे दायें या बायें रहे कि कोई और आदमी हर एक कुछ कर दें, या कोई हुकूमत या म्युनिसिपैलिटी अगर हुकूमत या म्युनिसिपैलिटी या जो कुछ हो वो अपना फर्ज नहीं ठीक करती आप आवाज उठाइयें ठीक है आपका हक है, आवाज उठाइये अपनी राय दीजिए वो जाहते से है, लेकिन जो बात आपको समझने की है वो यह है की हम खुद क्या कर सकते हैं । पडौसी की नुक्ताचीनी तो सब कर सकते हैं, लेकिन खुद क्या कर सकते हैं । हमारे सामने हम इस वक्त हम बड़ी बड़ी योजनाये बनाते हैं, और योजनाओं में बेशुमार रूपया खर्च होता है, कहां से रूपया आये, आखिर रूपया आप देते हैं, टैक्स में, कहीं आसमान से नहीं टपकता , और अगर हम और मुल्कों से कर्जा ले रूपया तो उस कर्जे का बोझा होता है, कर्जा अदा करना होता है । तो फिर कैसे हम यह बात करें, बड़ी बड़ी चीजें जो करनी है ? बेशक, बहुत तरीके हैं लेकिन एक बात अगर कुछ बड़ी बातों को छोडकर एक एक गावं में और एक एक शहर में अगर एक एक इंसान थोडी बात भी करें, मैं आपको मिसाल देता हूं और तजुर्बे से मिसाल देता हूं कई हमारे प्रदेशों में प्रान्तों में, खासकर देहातों में हमने प्रोग्राम बनाया कि लोग अपनी मेहनत से सडकें बनायें, सडकें बहुत कम हैं, आप जानते हैं, देहातों में, मकान बनायें, पंचायत घर बनायें कहीं कहीं छोटी छोटी नहरे खोदें कहीं छोटे स्कूल पाठशाला बनायें।

अपनी मेहनत से यानी सरकारी तौर से नहीं, सरकारी तौर से कुछ मदद भी मिल जाये उनको कुछ सामान मिल जाये और अपनी मेहनत से, चुनायें हजारों मिल सड़कें मुफ्त में उन्होंने लोगों ने बनाई अपने फायदे के लिए तो अब हम बड़े बड़े नक्शे बनाते और प्लान बनाते कि चलो भाई यहां सड़कें बनाने में, पचास लाख रूपये का एक करोड रूपये खर्च होंगे एक करोड रूपया लाओं, और इस तरह से वो नक्शे बनते रहते और हमारे दफ्तरों में बडे बडे फाइल बनते ऊंचे, और उस पर बडे बडे नोट लिखे जाते, लेकिन वो सडकें और विद्यालय वो नहीं बनते या अरसे बाद बनते, यह तरीका है, गवर्नमेंट जरा हल्के चलती है ! मुश्किल तो यह है, कि गवर्नमेंट की कार्यवाही । लेकिन लोग अगर खुद करें और उसमें गवर्नमेंट की तरफ से मदद हो कुछ न कुछ तो आप देखें, कि थोडे दिन में हम सारे इस हिन्दुस्तान के नक्शों को बदल सकते हैं और मुल्कों से आप देखें, मैं आपको मिसाल दे सकता हूं योरप के मुल्कों की मैं आपको मिसाल देता हूं चीन की, जहां लोगों ने अपनी मेहनत से यानी कोई मैं इस वक्त वो नहीं कह रहा हूं जो सरकारी तौर से या मजदूरी से हो । लेकिन अपने गावं वालों ने कहा हम अपने गावं की सडकें, बना देगें । हम यहां एक स्कूल बनायेंगे, पंचायत घर बनायेंगे और और उन्होंने खडा कर दिया और जब गांव कामुकाबला हुआ इसमें, कि हम ज्यादा आगे बढें कि तुम बढो तो सब लोग बढने लगे आगे एक दोस्ती के मुकाबले में । तो इस तरह से जो यह हमारी पांच बरस की योजना बनी है, यह न समझिए कि यह कोई सरकारी चीज है, ऊपर से करने की । यह तो है ही । लेकिन यह एक एक आदमी की चीज है, और उसमें सब लोग मिलें तो फिर हमें बाहर की न पैसे की जरूरत है न मदद की । याद रखिए यह आखिर आखिर यह जो पैसे का बड़ा चर्चा होता है, इससे हमारे दिमाग कुछ फिर गये हैं । बहुत

ज्यादा दुकानदारी के दिमाग हो गये हैं, और कुछ गलत हम समझने लगे है कि पैसा क्या चीज हैं अफसोस यह है कि पैसा एक जरूरी चीज है आजकल की जिन्दगी में । लेकिन आखिर में जो दौलत है इंसान के पास वो उसकी मेहनत है और दिमाग की काबलियत है, और हाथ पैर की ताकत है, मेहनत करने की आप और हम अपनी मेहनत से दौलत पैदा करते हैं कोई सोना चांदी बच्चे नही पैदा करते हैं । हालांकि आजकल के हिसाब से लोग यह समझते हैं और कुछ रुपैया भी ऐसा है । इसलिए जो असल दोलत हैं, वो इंसान की मेहनत है, और हमारे पास अ गर मुल्क में सोना चांदी काफी नहीं है तो इंसान तो काफी है तगड़े काम करने वाले । क्यों न हम उनके उस काम से और मेहनत से हम नई दौलत पदा करें, जो उनके पास जांये और मुल्क आगे बढ़ ? इस तरह से आजकल चीन का मुल्क बढ रहा है चीन का मुल्क बढ रहा है और मुल्क उस को कौन मदद करने वाले हैं ? लेकिन एक जोश से मेहनत करते हैं वो लोग । अमेरिका का एक देश है । बडा दौलत मंद देश हैं लेकिन यह न आप भूलिए कि उनकी दौलत आती कहां से है ? उनकी मेहनत से आती है, कोई बाहर से नही टपक पड़ती है । अपनी मेहनत से अपनी काबलियत से आती है क्योंकि आखिरमें कोई देश अपनी मेहनत से अपने बाजू बल से चल सकता है औरो के नहीं । इसलिए कभी कभी मैं देखता हूं हिन्दुस्तान में तो मुझे खयाल आता है कि कुछ पुराने गुलामी के तर्ज और खयालात हमसे दूर नहीं हुए और हम फिर हर वक्त ऊपर देखते हैं सरकार की तरफ और और कुछ इंतजार करते है ना नाराज होते है या अपने को बदकिस्मत समझकर हम बैठ जाते हैं, यह नहीं

कि और कुछ काम नहीं हैं बजाय इसके कि दरवाजे दरवाजे दफ्तरों के टकराने के हम फावड़ा लेकर जा कर कुछ खोदें, कुछ काम करें, और अपना शरीर को अच्छा करें, और कुछ पैदा करें उससे । मुश्किल तो यह है हर एक हमारे लोग अब शायद पहले से कम अब भी काफी सब लोग समझते हैं कि इज्जत बाबू होने में और बाबूओं के काम करने में और बाबू लोग अच्छे होते हैं यानी बाबू से मेरा मतलब है जो दफ्तरों में काम करें, या बड़े अफसर हों या छोटे अफसर हों, वो सब एक तरह से, उस किस्म का काम करते हैं, वह जरूरी काम है लेकिन मुल्क चलता है, हजारों बातों में हजार कामों से और हर एक आदमी कान में कलम रखकर दफ्तरों में बैठकर अगर जगह न हो तो उसको हम भर्ती तो नहीं कर सकते, लेकिन मुल्क में बहुत काफी काम है अगर वह कोई मिलकर उसे करें, खुद कुछ पैदा करें, बजाय इसके कि हर एक आदमी नौकरी की तरफ देखे । अभी कुछ दिनों में एक बड़ा चुनाव होने वाला है और आपके पास तरह तरह की बातें रखी जायेगी, कही जायेगी मैं उसमें नही जाता न मुनासिब है कि मैं आप लोग सारे मुल्क की बातें रखी जायेगी आप लोग सारे मुल्क की बातें लोग शान्ति से सहयोग से और अमन से काम लेगें । कोई झगड़ा फिसाद नहीं, कोई झूठ फरेब नहीं, क्योंकि चुनाव के वक्त पर झूठ फरेब बहुत चलता है धोखेबाजी उसमें आप नहीं पड़ेंगे न औरों को पड़ने देंगे यह एक दुनियां के इतिहास में एक जबरदस्त चीज जो यहां चुनाव होनेवाला है क्योंकि इतने लोग 17-18 करोड लोग आजकल दुनियां में किसी देश में इस प्रजातंत्रवादी चुनाव में नहीं पडे हैं तो इतनी बडी बात है तो एक बडा इमतहान हमारे लिए है, उस इम्तहान में अगर हम

कामयाब हुये तो हमारी शक्ति बहुत बढ़ती है नहीं हुये तो हम कुछ कमजोर होंगे । और ऐसे मौके पर कमजोर होगें जब काफी खतरे हैं । जरा दुनियां की तरफ आप देखें खतरनाक दुनियां है एक छोटा देश कोरिया साल भर से ऊपर से वहां लड़ाई ऐसी हुई कि वह देशतो करीब करीब नेस्तनाबूद हो गया, तबाह हो गया । लोग कहते हैं कि हम उनको कोरिया को बचाने को और आजाद करने को गये हैं, लेकिन आखिर में शायद कोरिया में कोई इन्सान न रहे जिसको आजादी की जरूरत हो, ज्यादातर लोग खत्म हो गये हों, उस लड़ाई में । तो यह आजकल की दुनियां के हाल हैं दुनियां का हाल है हमने एक विदेशी नीति पर हम चले कि हम लड़ाई झगड़ों में न पड़े । हम दुनियां के देशों में अमन रहें, हम कोई हम नहीं समझते कि हमारा देश लम्बा चौड़ा है हम कोई गरूर नहीं करते कि हम अपनी राय और लोगों को मजबूर करें, हम नहीं चाहते अपने अपने रास्ते पर लोग चलें और हम अपने रास्ते पर चलें । लेकिन आजकल की दुनियां गठी हुई है कि इसको आप अलग नहीं कर सकते, टुकड़े नहीं कर सकते, और मजबूरी दर्जे हमें भी और दुनियां के सवालों में पड़ना पड़ता है और अपनी राय देनी होती है । हमेशा हमने कोशिश की कि इस बात को सामने रखें कि दुनियां में अमन कैसे होता है, क्योंकि आजकल लड़ाई से ज्यादा खतरनाक और तबाह करने वाली चीज कोई नहीं है । और अगर दुनियां भर में लड़ाई हुई एक नयी किस्म की लड़ाई तो यकीनन दुनियां में जो कुछ तरक्की हुई है जो कुछ दुनियां की कौमें बढ़ी है वो सब खत्म हो जायेगी और एक वहशत की तरफ दुनियां फिर बढ़ने लगेगी , तो यह बड़ी खतरनाक बात है । हम चाहते हैं दुनियां को रोके । क्योंकि जो कुछ दुनियां में हो, उसका असर हम पर पड़े, चाहे हम उसमें ज्यादा हिस्सा लें, या कम हिस्सा लें या न हिस्सा लें, असर हर मुल्क पर ---

पर उसका पड़े इसलिए हमने यह विदेशी नीति रखी हमने कोशिश की कि हम हर मुल्क से दोस्ती करें, अपने रास्ते पर चलते जायें और दोस्ती करें, हमारी ख्वाहिश थी कि हम हमारा जो पड़ौसी मुल्क है जो कि कल या परसों या चार बरस हुए तब एक एकसी हिन्दुस्तान का जुज था लेकिन उस दिन से आज के दिन चार बरस हुए वह अलग हो गया और पाकिस्तान बन गया, हमारी कोशिश थी कि उससे भी हम दोस्ती करें, हमें अफसोस हुआ कि हिन्दुस्तान का टुकड़ा अलग हुआ, लेकिन हमारे आखिर में मंजूरी से हुआ, हमारी रजामंदी से हुआ यह सोच कर कि इससे शायद हम फिर आइंदा ज्यादा दोस्तीमैंरह सकें आइंदा मिल सके और यह जो अंदरूनी झगड़ा जो रोज हो रहे थे उनको किसी तरह कम करना था, क्योंकि वह हमारी आजादी के रास्ते में आते थे। खैर, गलत या सही हमने उस बात को मंजूर किया और उस बात पर हमें कायम रहना है और यह बात साफ समझ लें कि जो लोग इस बात पर कायम नहीं है और जो लोग कहते हैं कि नहीं उखाड़ पछाड़ करनी है, वह लोग न हमारे मुल्क की खिदमत करते हैं न किसी और बात की, क्योंकि इसके माने लड़ाई झगड़ा फिसाद आपस में हर जगह चुनांचे इस बात को तो पक्का समझना है तो हमने कोशिश की, लेकिन बदकिस्मती से आप जानते हैं कि काफी इस चार बरस में कशमकश रहा, पाकिस्तान की हुकूमत में और हमारी हुकूमत में, काफी बड़े बड़ें सवाल उठे। उन सवालों में यह मौका नहीं है कि मैं जाउं, लेकिन इस वक्त, इस वक्त कान में कुछ आवाजें आती है लड़ाई के ढोलों की, ललकारों की और लोग कुछ डरकर, कुछ जोश में, गरज कि कोई भी उनका जज्बा

हो, उनके दिमागों में लडाई का चर्चा बहुत हो गया है । पाकिस्तान में वहां से आवाजें आती हैं और जब हमने बहुत कुछ सुना तो जाहिर है हम नहीं लडाई चाहते लेकिन हमारा फ़र्ज कि हम मुल्क को तैयार करें और हर तरह से मुल्क तैयार रहे किसी खतरे में न पड़े । और हमने यह सोचा कि हमारा मुल्क अगर पूरी तौर से तैयार है तब यह बहुत ज्यादा मुमकिन है कोई लडाई न हो । क्योंकि जो लोग तैयार नहीं होते उनके ऊपर हमले होते हैं, जो तैयारहो । हमले रूक जाते हैं तो इसलिए यह समझकर इस तरह से, इस तरह से लडाई रूक जायेगी हमने अपनी तो इसलिए यह समझकर इस तरह से इस तरह से लडाई रूक जायेगी हमने अपनी तरफ़ से जो कुछ मुनासिब तैयारी करना थी वह की । उसी के साथ आप जानते हैं कि बार बार मैं ने आपसे और मुल्क से दरखास्त की कि कोई शहर में या और ऐसी कार्यवाही न हो जिससे जैसा कि पाकिस्तान के शहरों में हुई है जिससे लोग समझने कि लडाई आने वाली है कि जिससे खामाखां एक दहशत फैलें और परेशानी फैले और हमारा काम काज में हर्ज हो । हम नहीं चाहते ऐसी फ़िजा पैदा करना और मैं मशकूर हूं आपका और लोगों का हिन्दुस्तान में कि आपने हमारी सलाह को माना और कोई ऐसी फ़िजा नहीं पैदा की और इतमीनान से बडे दिल से अपने काम को करते रहे । और यहां नहीं खाली दिल्ली शहर में बल्कि पंजाब में, पूर्वी पंजाब में सरहद तक अगर आप जाये तो बहुत आप देखेंगे कि हमारी भाई और बहिन इतमीनान से बगैर जरा भी परेशान हुए अपना काम काज या शहर में या कारखाने में या जमीन पर करते जाते हैं ऐन हिन्दुस्तान की सरहद तक तो पेड खुशी हुई की

बात है यह ताकत की निशानी है और यह हमारी अमन पसंदी की निशानी है ।

तो इस बात को आप कायम रखें लेकिन मैं चाहता हूं खास आज के दिन और इस मौके पर इस बात को दोहराना , और साफ करना कि हमारा मुल्क किसी किस्म की लडाई कहीं नहीं चाहता दुनिया में लेकिन खासतौर से विशेषकर हम नहीं चाहते कि पाकिस्तान से हमारी अन बन रहे लडाई हो, या कोई भी अनबन हों क्योंकि आखिर में कुछ भी जोश आपको या पाकिस्तान वालों को हो जाये, आखिर में पाकिस्तान के रहने वाले कल हमारे भाई है और हमारे एक मुल्क के रहने वाले थे । हजारों रिस्ते, हजार नाते हजार ताल्लुक तो वह कैसे टूट जाये जो चार पांच बरस में और क्यों टूटें ? हमारी एक बोली हमारा रहन सहन एक । हमारा इतिहास तारीख बहुत कुछ एक तो फिर क्यों वो लोग और हम लोग इस गफलत में पडेंऔर झगडे में जाये और एक दूसरे को तबाह करने की कोशिश करे ?

मैं तो हैरान होता हूं, जब मैं सोचता हूं कि कैसे हमारी ताकत जाया होरही है इस तरह से और किस गलत रास्ते पर पाकिस्तानद अक्सर चलता है और ताकत जाया होती है । इसलिए मैं बहुत सफाई आपसे इस वक्त कह रहा हूंऔर मैं उम्मीद करता हूं मेरी आवाज पाकिस्तान के लोगोंमे तक जायगी और और दुनिया भी सुनेगी कि हमारा यह पक्का उसूल यह है और हमारी पूरी कोशिश यह है कि हम अमन से रहे हम पाकिस्तान से अमन से रहे औ हम पाकिस्तान के लोगों से दोस्ती करें । हां और कभी किसी बात में आपको जोश चढ़ आये और तैश हो तो

उसको आप यह समझें यह न समझें कि एक कौम के खिलाफ जोश है । अगर पाकिस्तान किस एक आदमी ने गलती या दस ने या सौ ने या हजार ने तो इसके क्या माने हैं कि आप करोड़ों आदमियों को दुश्मन अपना समझें । क्या आपके हिन्दुस्तान में लोग गलती नहीं है । तो आप यह तो नहीं समझते कि खास हिन्दुस्तानी हमारा दुश्मन हो गया काफी खराब लोग वहां है गलत रास्ते पर चलने वाले काफी गलत रास्ते पर चलने वाले हिन्दुस्तान में भी होगें । इसलिए हम एक तरफ से पूरी तौर से तैयार रहे, क्योंकि तैयारी से हम अपने को महफूज करते हैं और लड़ाई यों को रोकते हैं दूसरी तरफ से हमेशा हमारा हाथ बढ़ा रहेगा और कौमों से हाथ मिलाने के लिए । हम किसी को धमकी नहीं देना चाहते । किसी को मुक्का नहीं दिखाना चाहते, हम हाथ बढ़ाते हैं, हाथ मिलाने के लिए और जो हाथ बढ़ा है पाकिस्तान के लोगों से हाथ मिलाने के लिए भी आज और कल भी रहेगा और चाहे जोश या चाहे कुछ हो, उस उसूल पर हम कायम रहेगें हां, अगर हमारे मुल्क पर कोई हमला, तो हमारा फर्ज है कि हिफाजत करें पूरी तौर से और उसके लिए तैयार रहे । आज के दिन आज के दिन खासतौर से हमें कुछ इन पुराने उसूलों को याद रखना है जोमहात्मा जी ने हमारे सामने रखें, जिस रास्ते पर चलकर हमने मुल्क को आजाद किया आखिरअगर उस रास्ते को हम छोड़ दें फिर क्या हमारा हश्र होगा खैर, मुझे तो इतमीनान है कि क्या क्या उसमें मुसीबतें आयेगी, और मुझे इतमीनान है कि क्या क्या उसमें मुसीबतें आयेगी और मुझे इतमीनान है कि हमारे लिएबुनियादी तौर से यही एक रास्ता जो गांधी जी ने दिखाया था उस पर हमें चलना है । इस झंडे के नीचे में खड़ा हूं और आप भी

इस झंडे को देख रहे हैं एक प्यारा झंडा है, एक सुंदर झंडा है और इसमें बहुत सारी बातें है, एक तो यह है कि यह एक निशानी है हमारी आजादी की लडाई का । इसके नीचे खड़े होकर कितनी बार हमने प्रतिज्ञा ली, इकरार किए और हम उन उसूलों पर कायम रहेंगे, और हम हिन्दुस्तान की हिफाजत करेंगे, और आजाद रखेंगे और हम हिन्दुस्तान में एकता करेंगें और मिलकर रहेंगे हम कभी नीच बात नहीं करेगें यह हमने प्रतिज्ञा की । तो एक पुरानी निशानी है जो याद दिलाती है हमारी आजादी की लडाई को और उसमें कुरबानियों को उसी के साथ उसमें एक आजकल की निशानी है और उसमें देखेंगें कि पुराना जो झंडा था उसमें उसको हमने रखा, और उसमें थोड़ासा फरक भी कर दियाकर दिया, वो फरक क्या है वो इसके बीच में एक चक्र आ गया और एस चक्र ने आकर किया वो सारे हिन्दुस्तान के पिछले कई हजार बरस की तारीख को इस झंडे में उसने लाकररख दिया । क्योंकि यह चक्र हिन्दुस्तान की कई हजारों बरस पुरानी निशानी है आर यह चक्र निशानी है हिन्दुस्तान के लडने की नहीं, हिन्दुस्तान के शान्तिप्रिय होने, की अमन पंसद होने की, यह निशानी, है कि हिन्दुस्तान के लोग हमेंशा याद रखें कि हमें सच्चाई और धर्म के रास्ते पर चलें यह निशानी पुरानी है अशोंक के पहले, सम्राट अशोक के पहले, सम्राट अशोक के पहले की है लेकिन सम्राट अशोक के नाम से खास तौर से यह बंधी है तो इसलिए इसके रहने से हमारे झंडे में हजारों बरस की तारीख को इस झंडे से बंध गयी है और हजारों बरस से जो हमारे सामने ध्येय था जिस तरफ हिन्दुस्तान के ऊंचे लोगों की निगाहें थी वह बात इसमें आ गयी । तो इसमें

पुराना, जमाना आया हजारों बरस का, इसमें पिछला जमाना आया, चालीस पचास बरस का, आजादी की लड़ाई का और इसमें आज आयी और आखिर में इसमें आने वाला कल आया, जो हमें दिखाता है किधर हम जायेंगे। पुराना जमाना हुआ उससे हम सबक सीखें, उसकी अच्छी बातें याद रखें, लेकिन आखिर में हमारी निगाहें आगे होनी है, भविष्य की तरफ होनी है, जो आने वाला जमाना है, उधर होनी है, और उसके लिए हमें तैयार होना है, तगडा होना है, मजबूत होना है और जो जो तकलीफें और मुसीबत आये उसको हिम्मत हार के नहीं, बल्कि उसको मजबूती से सामना करना है। क्योंकि मुझे इतमीनान है कि हिन्दुस्तान का भविष्य एक जबर दस्त भविष्य है इस माने में नहीं कि हम और मुल्कों कर फतह करें, और हरायें, वह जमाने गये, मुल्कों के लिए और जो कोई लड़े से लड़ा मुल्क को हराना चाहे और और अपनी हुकूमत में लाना चाहे, वह आजकल के जमाने में बदनाम होता है, और आखिर में उसे हार माननी होती है।

तो इसलिए, हम बडा पन यह नहीं है कि हम और कौमों को दबायें। बडापन यह है कि हम अपने मुल्क को ऊंचा करें, और कौमों से दोस्ती करें। और अपना फायदा करें और दुनियां का फायदा करें। इस रास्ते पर हमें चलना है और इस नाजुक मौके पर आजकल की दुनियां के, और हिन्दुस्तान के हमें हर बात के लिए, तैयार रहना है, और आपस में मिल के आगे बढ़ना है। क्योंकि हम सब हम सफर हैं, एक यात्रा पर हमें जाना है और अगर हम रास्ते पर ही एक दूसरे से लड़ें तो आगे कैसे बढ़ सकते हैं ?

तत, अब मैं आपसे जयहिन्द कर के, खत्म करता हूं और उसके बाद मैं चाहता हूं कि आप भी मेरे साथ तीन बार जयहिन्द करें ।

जयहिन्द-जनता: जयहिन्द

जरा जोर से कहिए: जयहिन्द-जनता :जयहिन्द

एक और दफे : जयहिन्द-जनता :जयहिन्द ।।